



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दैनिक ताज़ागत

दिनांक ११. ११. २०२० पृष्ठ संख्या ३ कॉलम २-५

गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मां

गिरता भूमिगत जलस्तर चिंतनीय : वीसी



प्रो समर सिंह • जागरण आर्काइव

जागरण संवाददाता, हिसार : गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। यह बातें चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कही।

वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बताये मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया।

उन्होंने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए, ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों को जागरूक करते हुए कहा कि वह

अनुदान पर मिल रहे कृषि यंत्र कृषि विज्ञान केंद्र, कैथल के मुख्य विज्ञानी डा. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं, ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें।

खेतों में अवशेष न जलाएं। इससे पर्यावरण भी प्रदूषित होता है और भूमि की उर्वरा शक्ति पर भी असर पड़ता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

पंजाब के सरी

दिनांक 9.11.2020 पृष्ठ संख्या 2 कॉलम 6-8

गिरता भूजलस्तर व घटती उर्वरा शवित चिंतनीय : समर सिंह

कृषि विज्ञान केंद्र कैथल में किसान मेले का आयोजन

हिसार, 8 नवम्बर (ब्यूरो) : गिरते भूजलस्तर और घटती जौत के चलते फसल चक्र अपनाकर न सिर्फ किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं, बल्कि भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रो. समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि खेत में लगातार धान व गेहूं लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित : कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी



किसान मेले के दौरान संबोधित करते विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. समर सिंह व मौजूद अन्य अधिकारी।

दी। उन्होंने गेहूं की बिजाई के लिए हैप्पी सीडर व जीरो टिलेज यंत्र पर भी प्रकाश डाला।

उन्होंने केन्द्र द्वारा विकसित गेहूं की उन्नत किस्मों की सम्यक्रियाओं के बारे में बताया। इस दौरान मुख्यातिथि प्रो. समर सिंह ने संरक्षित खेती में विशेष योगदान के लिए डॉ. अनिल खिप्पल व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 30 किसानों को सम्मानित किया। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. जसवीर सिंह व डॉ. संजय कुमार ने बताया कि इस मेले में 300 किसानों ने भाग लिया तथा सरकारी व गैर सरकारी 10 कम्पनियों और प्रगतिशील किसानों ने प्रदर्शनी स्टाल लगाए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	09.11.2020	--	--

गिरता भूमिगत जलस्तर और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीय : प्रोफेसर समर सिंह

हैलो हिसार न्यूज़

हिसार : गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बताए मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन



परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को

आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि

धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मांग : प्रोफेसर समर सिंह

आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूं	09.11.2020	--	--

कृषि मेला

कृषि विज्ञान केंद्र में किसान मेले में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित

‘भूमि की घटती उर्वरा शक्ति धिंतनीय’

सच कहूं/संदीप सिंहमार
हिसार।

गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संरक्षणों का संरक्षण बहुत ज़रूरी है। ऐसे में चक्र अपनाकर किसान कापों हृद तक प्राकृतिक संरक्षणों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं।

उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा उदयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को ज़ाहिर मुख्यालियि संबोधित कर रहे थे। मेले का



विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह व योजूद अन्व अधिकारी।

आयोजन इन-स्टॉट फसल अवयोग हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही तत्व मिलते रहे। उन्होंने किसानों से प्रबंधन परियोजना के तहत किव्व खेतों में धान व गेहूं को लगाने से फसल अवशेष जलाने को जमीन में गया। मुख्यालियि ने कहा कि किसान जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर इसलिए, एक फसल धान के बाद किसानों से आह्वान किया कि वे गिरते भू-स्तर और भूमि के दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए। फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से ताकि भूमि को आवश्यक पोषक प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें।

बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवस्था इधे अपनाने की अपील की। कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मूल्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रखी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए कस्टम हाई केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि वंतु हर गांव में अलगवा करवाए जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	09.11.2020	--	--

धान-गेहूंफसल चक्र में बदलाव समय की मांग : कुलपति



हिसार, 8 नवंबर (सुरेंद्र सोडा) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा कि गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोड़ के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैबिन द्वारा आगोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बर्तीर मुख्यालिंग संबोधित कर रहे थे। कुलपति ने कहा कि ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की ऊर्जा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। मेले का आगोजन इन-सीटु फसल अवशेष प्रबन्धन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यालिंग ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के अव्याप्तियन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जड़ीन की ऊर्जा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी छाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पौष्टक तत्व मिलते रहें। उन्होंने

कृषि विज्ञान केंद्र, कैबिन के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबन्धन व रखी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबन्धन के लिए कानून लागू कर्ने के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हार गांव में उत्तमव बनवाए जा सके हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबन्धन करके अपनी जड़ीनों की ऊर्जा याकिं बढ़ा सकें। इनके अलावा उन्होंने गेहूं की बिजाई के लिए हैपी सीज़ व जीरो ट्रीलेज यंत्र पर भी प्रकाश डाला।

किसानों से फसल अवशेष जलाने को जपीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से अहमन किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबन्धन करके अपनी जड़ीनों भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी उमड़दी में इजाफा करने के लिए संतुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. जसवीर सिंह व डॉ. संजय कुमार ने कहा कि इस मेले में 300 किसानों ने भाग लिया तथा सरकारी व गैर सरकारी 10 कम्पनियों और प्रगतिशील किसानों ने प्रदर्शनी स्टाल लगाए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	09.11.2020	--	--

गिरता भूमिगत जलस्तर और भूमि की घटती
उर्वरा शक्ति चिंतनीय : प्रोफेसर समर सिंह

वाटिका@हिसार। गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बताए मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूँ फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व





चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल हिसार	08.11.2020	--	--

गिरता भूमिगत जलस्तर और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीयः प्रो. समर सिंह

पल पल न्यूजः हिसार, 8 नवंबर। गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहा। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बताए मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद



दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदानी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदानी में इजाका करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्ये अपनाने की अपील की। कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. रमेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के लिए कस्टम हायर केन्द्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें। इस दौरान मुख्यातिथि प्रोफेसर समर सिंह ने संरक्षित खेती में विशेष योगदान के लिए डॉ. अनिल खिप्पल व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 30 किसानों को सम्मानित किया। कृषि विज्ञान केन्द्र अंबाला के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. बलवान सिंह मंडल ने किसानों को कृषि वानिकी व फसल अवशेष प्रबंधन पर विस्तारपूर्वक जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	08.11.2020	--	--

धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मांगः प्रो. समर सिंह

हिसार | गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जौत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दैरान किसानों को बतौर मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन सीढ़ी फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलानी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
नम छोर	08.11.2020	--	--

प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी : कुलपति

हिसार/08 नवंबर/रिपोर्टर

गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बतार मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूँ फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूँ को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को



आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आलावा किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की। कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. स्मेश वर्मा ने इस किसान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन व रबी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सरकार द्वारा

फसल अवशेष प्रबंधन के लिए कस्टम हायर केंद्रों के माध्यम से अनुदान पर विभिन्न कृषि यंत्र हर गांव में उपलब्ध करवाए जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबंधन करके अपनी जमीनों की उर्वरा शक्ति बढ़ा सकें। इसके अलावा उन्होंने गेहूँ की बिजाई के लिए हैप्पी सीडर व जीरो टीलेज यंत्र पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने केन्द्र द्वारा विकसित गेहूँ की उन्नत किसिमों की सस्य क्रियाओं के बारे में बताया। इस दौरान मुख्यातिथि प्रोफेसर समर सिंह ने संरक्षित खेती में विशेष योगदान के लिए डॉ. अनिल खिप्पल व उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 30 किसानों को सम्मानित किया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	08.11.2020	--	--

गिरता भूमिगत जलस्तर और भूमि की घटती उर्वरा शक्ति चिंतनीय : प्रोफेसर समर सिंह

पाठकपक्ष न्यूज़

हिसार, 8 नवम्बर : गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जोत के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि की उर्वरा शक्ति को भी बनाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समर सिंह ने कहे। वे विश्वविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दौरान किसानों को बताए मुख्यातिथि संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत



किया गया। मुख्यातिथि ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव कर गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊपन को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन की उर्वरा शक्ति घट जाती है। इसलिए एक फसल धान के बाद दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें।

उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया। उन्होंने किसानों से आहवान किया कि वे फसल अवशेषों का बेहतर तरीके से प्रबंधन करके अपनी आमदनी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदनी में इजाफा करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आधारित व्यवसाय धन्धे अपनाने की अपील की।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	08.11.2020	--	--

हिसार/अन्य

पांच बजे 3

कृषि विज्ञान केंद्र कैथल में किसान मेले में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित

धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव समय की मांग : प्रो. समर सिंह

पांच बजे ब्लॉग

हिसार। गिरते भूमिगत जलस्तर और घटती जारी के चलते प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण बहुत जरूरी है। ऐसे में फसल चक्र अपनाकर किसान काफी हृद तक प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण कर सकते हैं और भूमि को उत्तरी शक्ति को भी बढ़ाए रख सकते हैं। उक्त विचार चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के कुलपति प्रोफेसर समान सिंह ने कहा। वे विद्याविद्यालय के कृषि विज्ञान केंद्र कैथल द्वारा आयोजित किसान मेले के दैरण किसानों को बताए मुख्यालिखित संबोधित कर रहे थे। मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबन्धन परियोजना के तहत किया गया। मुख्यालिखित ने कहा कि किसान धान-गेहूं फसल चक्र में बदलाव का गिरते भू-स्तर और भूमि के उपजाऊतम को संरक्षित कर सकते हैं। उन्होंने कहा कि लगातार एक ही खेत में धान व गेहूं को लगाने से जमीन को उत्तरा



भट आती है। इसलिए एक ही खेत में धान का दूसरी दलहनी फसल बोनी चाहिए ताकि भूमि को आवश्यक पोषक तत्व मिलते रहें।

उन्होंने किसानों से फसल अवशेष जलाने को जमीन में ही किसानों पर जो दिया।

फसल अवश्यों को बेहतर तरीके से प्रबन्धन करके अपनी आमदानी भी बढ़ा सकते हैं। इसके अलावा उन्होंने किसानों से अपनी आमदानी में इनकाफ करने के लिए संयुक्त कृषि प्रणाली और कृषि आयोजित व्यवसाय धर्थे अपनाने को अपील की।

उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले किसान सम्मानित

कृषि विज्ञान केंद्र, कैथल के मुख्य वैदानिक डॉ. मंसा वर्मा ने इस विज्ञान मेले में फसल अवशेष प्रबन्धन व रसी फसलों की वैज्ञानिक खेती के बारे में विद्युत जानकारी दी। उन्होंने किसानों को फसल अवशेष प्रबन्धन पर समर्क द्वारा चलाई गई विभिन्न स्थानों के बारे में बताया। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डॉ. जसवंत सिंह डॉ. संजय कुमार ने बताया कि इस मेले में 300 किसानों ने भाग लिया तथा सरकारी व गैर सरकारी 10 कर्मचारी और प्राविशील किसानों ने प्रदर्शनी स्टाल लगाए।

जा रहे हैं ताकि किसान फसल अवशेषों का उचित प्रबन्धन करके अपनी जमीनों को उत्तरा शक्ति बढ़ा सके। इसके अलावा उन्होंने



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक ४. ११. २०२० पृष्ठ संख्या ५ कॉलम ५७

एचएयू में लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के लिए ३१ दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन अवॉर्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी

हिसार | एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा बवाज़ा ने बताया कि अवॉर्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि ३१ दिसंबर है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवॉर्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवॉर्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेंबर या अधिकारी

द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवॉर्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हीं और उसकी उम्र ६० वर्ष से अधिक होनी चाहिए।

इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हीं, उसके आश्रित भी। इस अवॉर्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस

अवॉर्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा बवाज़ा ने बताया कि अवॉर्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा।

आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्म में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....उभर उजाला.....
दिनांक .8.11.2020 पृष्ठ संख्या.....4.....कॉलम.....1-2.....

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के लिए मांगे आवेदन

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवॉर्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। अवॉर्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है। विवि के कुलपति प्रो. समर सिंह ने बताया कि इस अवॉर्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। इस अवॉर्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिहाँने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवॉर्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवॉर्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्म में संक्षिप्त बायोडाटा सहित अपने आवेदन को सीधे विवि के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक . ४. ११. २०२० पृष्ठ संख्या..... ३ कॉलम..... ।

एचएयू ने लाइफ टाइम अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

जासं, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. आशा कवात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है।

विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेंबर या अधिकारी द्वारा की गई उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता की उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	08.11.2020	--	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

एचआर ब्रेकिंग न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेंबर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है।

इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों,



स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा का फाइल फोटो।

उसके आंतरिक भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्म में संक्षिप्त बायो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सच कहूँ	08.11.2020	--	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

हिसार (सच कहूँ नूज़).

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। वह जानकारी देते हुए स्नातकोन्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा कांता ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुख्य, फैकल्टी मेंबर वा अधिकारी द्वारा किए ए. उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी आ 60 कर्म से अधिक होनी चाहिए। इसके

अलावा मूलक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उनके आवित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलापति, पूर्व अधिष्ठाता वा फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिपारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा कांता ने बताया कि अवार्ड समारोह में शमिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खुर्च विश्वविद्यालय द्वारा बहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन पत्रम् व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की केबिनेट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्म में सक्षिप्त वर्षों-डाटा सहित अपने आवेदन को संपूर्ण चौथों चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोन्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	08.11.2020	--	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा कवात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक 31 दिसंबर लाख रुपये की तक कर नकद राशि के साथ सकते हैं सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। आवेदन उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुख्य, फैकल्टी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्ण कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा कवात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	08.11.2020	--	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपए की नकद राशि के साथ

सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुख्या, फैकल्टी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय

31 दिसंबर तक
कर सकते हैं
आवेदन

में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके अश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्म में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अजीत समाचार न्यूज	07.11.2020	--	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

31 दिसम्बर तक कर सकते हैं आवेदन

हिसार, 7 नवम्बर (राज पराशर) : अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डा. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसम्बर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्रिटका भी दी जाएगी।



उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके

में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आंत्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डा. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्म में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	07.11.2020	--	--

हकृवि ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए 31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

समस्त हरियाणा न्यूज इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने हिसार। चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। अलावा मृतक जिन्होंने यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं अधिष्ठाता डॉ. आशा क्रात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। होना चाहिए।



उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का डॉ. आशा क्रात्रा ने बताया कि मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में अवार्ड समारोह में शामिल होने के संस्थान के मुखिया, फैकल्टी लिए चयनित उम्मीदवार के आनेमेंबर या अधिकारी द्वारा किए गए जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। वहन किया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	08.11.2020	--	--

हकूमि ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन



हिसार, (सुरेंद्र सोनी) : बौद्धरी वरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने ताइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा छात्रा ने द्वातांश कि अवार्ड के लिए आवेदन की अर्हित तिथि 31 दिसंबर 20,20 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक डॉ. आशा छात्रा लाख स्थायी की नकद राशि के साथ सम्मान पटुका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संरचना के मुख्यांग, पैकलटी मेमर या अधिकारी छात्रा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी ही और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इनके अलावा मूलक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हीं, उसके आंतित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का ग्राहनी पत्र किसी पूर्ण कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा छात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शमिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खुर्च विश्वविद्यालय द्वारा कहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन कार्म व अन्य हितयों विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोक्टोर्म में संबंधित दोषी-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी वरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करना सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	07.11.2020	--	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन आमंत्रित

31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

सिटी पल्स न्यूज, हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्रात्रा ने बताया कि विश्वविद्यालय की आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रूपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस



अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता

या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए।

डॉ. आशा क्रात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा बहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्म में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को संपूर्ण चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	07.11.2020	--	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन, 31 दिसंबर तक कर सकते हैं आवेदन

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पटिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए। डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड समारोह में शामिल होने के लिए चयनित उम्मीदवार के आने-जाने का खर्च विश्वविद्यालय द्वारा वहन किया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन फार्म व अन्य हिदायतें विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर उपलब्ध हैं। आवेदनकर्ता निर्धारित प्रोफोर्म में संक्षिप्त बॉयो-डाटा सहित अपने आवेदन को सीधे चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर अधिष्ठाता कार्यालय में जमा करवा सकता है।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल न्यूज	07.11.2020	--	--

सार समाचार

एचएयू ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

पल पल न्यूज़: हिसार, 7 नवंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड के लिए आवेदन मांगे हैं। यह जानकारी देते हुए स्नातकोत्तर अधिष्ठाता डॉ. आशा क्वात्रा ने बताया कि अवार्ड के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 31 दिसंबर 2020 है। विश्वविद्यालय की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड में एक लाख रुपये की नकद राशि के साथ सम्मान पट्टिका भी दी जाएगी। उन्होंने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय में संस्थान के मुखिया, फैकल्टी मेम्बर या अधिकारी द्वारा किए गए उत्कृष्ट सेवाओं को सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकर्ता ने विश्वविद्यालय में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दी हों और उसकी उम्र 60 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा मृतक जिन्होंने विश्वविद्यालय में विशिष्ट सेवाएं प्रदान की हों, उसके आश्रित भी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकर्ता का प्रार्थना पत्र किसी पूर्व कुलपति, पूर्व अधिष्ठाता या फिर इस अवार्ड से सम्मानित किसी सदस्य द्वारा सिफारिश किया होना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	07.11.2020	ऑनलाइन	--

एचएयू ने लाइफ टाइम अचौकमेंट अवार्ड के लिए मांगे आवेदन

SHARE



31 दिसंबर तक किए जा सकेंगे आवेदन

हिस्ता,
हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार ने लाइफ टाइम अचौकमेंट अवार्ड के लिए आवेदन नामे हैं। स्वतंत्रतासंग्रह अधिकारी डॉ. अमल कुमार द्वारा दर्शाया गया है। अवार्ड के लिए आवेदन की ओर से दिए जाने वाले इस अवार्ड से एक लाख रुपये की नमूद दर्ता के साथ सम्मान प्रदीपक है दी जाती है। उम्हीने बताया कि इस अवार्ड का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय से लंबवेळ के लिए योग्य और अधिकारी द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्यों की सम्मान देना है। इस अवार्ड के लिए आवेदनकारी ने विश्वविद्यालय से अपनी उम्हीन लेखांश ही हों और उम्हीन कम 60 उम्हीन से अधिक होनी चाहिए। इसके अलावा सूक्ष्म विभागोंमें विश्वविद्यालय से लिए गए सेवाएँ दर्शायी ही हों, जिनके अधिकारी इस अवार्ड के लिए आवेदन कर सकते हैं। आवेदनकारी का प्रार्थना पत्र किसी भी कृत्यालय, एवं अधिकारालय से लिए इस अवार्ड से सम्मानित कियी जाने दें द्वारा विश्वविद्यालय किया जाना चाहिए। डॉ. अमल कुमार ने बताया कि अवार्ड सम्भालने के लिए एकलिङ्ग उम्हीनदार के अवैधतावाले का बहुत विश्वविद्यालय दूसरों का बन दिया जाएगा। इसके अलावा अवार्ड के लिए आवेदन करने संबंधी आवेदन नामे उम्हीन हिस्तापत्र के लिए विश्वविद्यालय के स्वतंत्रतासंग्रह अधिकारी द्वारा लड़के जैसे अवार्ड करना चाहिए।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....

दीन क जारीरा

दिनांक ८. ११. २०२० पृष्ठ संख्या..... ३ कॉलम..... २-६

जागरूकता

साहू में किसान मेला, अब हर कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान मेले आयोजित कर रहा हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान

जगरण संघटना, हिसार :
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गंगा साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इसका आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में विज्ञानियों



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय का गेट • जगरण आर्काइव

करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गंगा साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इसका आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में विज्ञानियों

द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष विविधकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गंगा साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इसका आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में विज्ञानियों

राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने की बजाय जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्पॉग वाली धूंध : अभियंता गोपी

जीरो ड्रिल और हैप्पी सीडर का प्रयोग कर करें गेहूं की बिजाई

कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डा. नरेंद्र कुमार ने कहा कि पराली जलाने की नहीं, बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्दरा शवित में बढ़ातरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन

करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मरीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया।

लोगों की सांस संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फायदेमंद जीवाणु व कैंचुए भी मर जाते हैं। डा. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी

अधिकारी डा. सुरेंद्र सिहांग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, डिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....पंजाब के सरी

दिनांक ..9....11....20....पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....1-2.....



किसानों को संबोधित करते कृषि अधिकारी।

(गोयल)

किसानों को जागरूक करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र ने लगाया मेला पराली जलाना सेहत और भूमि के लिए हानिकारक

मंडी आदमपुर, 8 नवम्बर (गोयल): सदलपुर के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा साहू गांव में इन सीटू क्रॉप रेसिटू मैनेजमेंट परियोजना के तहत फसल अवशेष प्रबंधन विषय पर किसान मेले का आयोजन किया गया। इसमें आसपास के गांवों से 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई।

कोरोना संक्रमण को लेकर मेले में विशेष सावधानी बरती गई सभी किसानों को मास्क वितरित किए गए। इस मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी व अन्य विभागों की स्टाल एंजीबिशन भी लगाई गई।

केंद्र के को-ऑर्डिनेटर डा. नरेंद्र कुमार ने किसानों को बताया कि पराली जलाने की नहीं, बल्कि उसे मिट्टी में मिलाकर गलाने की जरूरत है, ताकि जमीन का स्वास्थ्य व उपजाऊपन सुधरे। डा. सत्यवीर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने और जैविक जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं।

जिला बागवानी अधिकारी डा. सुरेंद्र सिहांग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार की स्कीमों जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉली हाऊस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी किसान को दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....ज्ञान उत्तम.....

दिनांक ४/११/२०२० पृष्ठ संख्या.....५..... कॉलम.....१-२.....

किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन को लेकर किया जागरूक

मंडी आदमपुर। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) ने बचुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेला आयोजित किया जा रहा है। इसी कड़ी में कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतारी हो सके। अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जानकारी दी। अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मृग यानी धूएं वाली धूंध का कारण बनती हैं। डॉ. सत्यवीर कुडू ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दीन का मासिक
दिनांक .५.।।.२०२० पृष्ठ संख्या.....?.....कॉलम.....८.....

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने साहू में लगाया किसान मेला

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शनिवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीट फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदानी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतरी हो सके।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
दैरेखन

दिनांक ११. ११. २०२० पृष्ठ संख्या १ कॉलम ७-८

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : वैज्ञानिक

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिलास्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है।

इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का

आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेन्द्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बाल्कि उसे निट्रो में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ातरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं।

अभियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटोवेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाई करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उर्वरा शक्ति बढ़ाई जा सके।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
एचआर ब्रेकिंग न्यूज	08.11.2020	--	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : वैज्ञानिक कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में आयोजित किया किसान मेला

एचआर ब्रेकिंग न्यूज



प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्षुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इनसीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया।

मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बर्तन्क उसे मिट्टी में मिला कर जलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ाती हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित क्रियान्वयन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार

कर बिक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। कर बिक्री करके आमदनी दी गई। कोरोना संक्रमण के अभियंता अजैत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मरींगों जैसे रोटाकेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्विल व हैपी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी विजाई करने का आल्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उर्वरा शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसापास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियन्त्रण, बागवानी व पशु पालन

की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण के चलते सामाजिक दूरी, मास्क व सेन्टाइजरेशन का विशेष ध्यान रखा गया। इस दैरेन मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल भी लगाई गई।

अवशेष जलाने से ही स्मार्ग वाली धुधः : अभियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूखा जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इससे अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मार्ग यानी धुएं वाली धुम्की का कारण बनती हैं। इससे लागों की जानकारी दी।

विस्तार शिक्षा निवेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केंद्र) डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अवतूर्वर में आयोजित वर्षुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैपी सीडर व जीरो ड्विल से विजाइ जैसी जनकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	08.11.2020	--	--

हिसार-आसपास

हिसार, र

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब हर कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान मेले आयोजित कर रहा एचएयू

टुडे न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान संगीत्य किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकण सहित अन्य जानकारियों से अवातरण कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुरू कराया गया विज्ञान केंद्र पर किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया।

मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जरूरी में ही मिलाने पर जारी दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के सम्पर्ककर्ता डॉ. नंदेंदु कुमार ने किसानों को संवेदित करने हुए कहा कि पराली जलाने की नई वर्तिक उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जरूरी के उद्दीपन शर्कित में बढ़ाती ही हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ अपम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर विक्री करके आमदनी



कृषि विज्ञान केंद्र उद्घाटन प्रसाद गांव लालौं में आयोजित किसान मेले में मोजुल किसान व संबोधित करते वक्त।

बढ़ा सकते हैं। अधिकारी अग्री सांगवान ने पराली को जरूरी में मिलाने के लिए उपयुक्त मरीनों जैसे रोटाटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो डिल व हैप्पी सीटर का प्रयोग करके गैरू की सीधी विजाह करने का आइडे किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जाए। फसल उत्पादन, खरपतवारी, निवेश, बाधावानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण के बलते सामाजिक दूरी, मासक व सेनेटाइजेशन का विशेष ध्यान रखा गया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह

सके। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवारी, निवेश, बाधावानी व पशु पालन की सामाजिक वहत ही मूरिकल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले भूएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें भूल जाती हैं जो स्माग यानी थुंड वाली धूम का कारण बनती है। इससे लोगों की शवसान संबंधी

प्रत्येक केवीके में लगाए जाएंगे किसान मेले

हिसार विवेशियालय के सह-नियेकक (फिल्म प्रार्थी केंद्र) डॉ. सुलीम दाता ने बताया कि विवेशियालय द्वारा उद्घाटन में आयोजित वर्तुल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेष की बीच में ही हैप्पी सीटर व जीरो डिल से विजाह जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जागरूकता और अभियान नी घटाए जाएंगे।

परालीवाला बढ़ जाती है। इसके अलावा मिट्टी में मौजूद फलदेहर जीवाणु व केचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. सल्वीर कुमार ने बताया कि पराली से बायोगैस बनाने की विधि और जैविक खाद व दीरिया बनाने की विधियां विविहित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र मिहान ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणपरी योजनाओं जैसे मरालूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, डिप सिंचाई, पौलीजाइट्स, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	08.11.2020	--	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : वैज्ञानिक

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्षुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकण सहित अन्य जानकारीयों से अवगत कराया जा रहा है। इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुरे ने गाव सहू, में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन के साथ-साथ अम जनजीवन और इन-सीटू, फसल अवशेष प्रबंधन भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पर्यायोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बजाय उहें मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका अजीत सांवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उम्युक मशीनों को आमदानी जैसे रोटाटेटर आदि के बारे

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गाव सहू ने आयोजित किया किसान मेला



में जानकारी दी। गाव ही किसानों से अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवार नियंत्रण, बागवानी व पुष्प पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण के चलते सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटाइजेशन का विशेष उनको भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उवर्ता शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसपास के गावों के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल

स्मैग बाली धूंध : अभियंता गोपी राम सांगलीन ने बताया कि परली जलाने से सूक्ष्म जीव व नित्र की नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धूएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें छुल जाती हैं जो सांग बानी धूएं वाली धूम्ख का कारण बनती थीं। इससे लोगों की शासन संबंधी परेशानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में भौजुंग फायदेमंद कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों की आयोजित करने का विषय लिया गया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनी वह अन्य विभागों की स्टाल भी लगाई गई।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, डिप सिंचाई, पालीहाउस, कोल्ट स्टोरेज आदि की जानकारी दी। प्रत्येक कैटीके में लगाए जाएंगे किसान मेले : विस्तार लिया निर्देशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केंद्र) डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि, विवरविद्यालय द्वारा अन्तर्कर में आयोजित वर्षुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों की आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। डॉ. सल्वली कृष्ण ने बताया कि पराली से बायोप्रेस बनाने की विधि और औद्योगिक खाद्य व दीर्घ बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। डॉ. दीपेंद्र सिंहाग ने किसानों की बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के बीच में ही हैप्पी सीटर और किसान लैंगर से बिजाई जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
समस्त हरियाणा न्यूज	07.11.2020	--	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर
ने गंगा साहू में आयोजित
किया किसान मेला

वर्चुअल कृषि मेले के बाद
अब हर कृषि विज्ञान केंद्र
पर किसान मेले आयोजित
कर रहा एचएयू

समस्त हरियाणा न्यूज
हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधकरण सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा रहा है।

इसी कड़ी में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गंगा साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को फसलों के अवशेष जलाने की बायाँ उन्हें जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके किसानों को आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताए गए।

कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बल्कि उसे मिट्टी में मिला कर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन की उर्वरा शक्ति में बढ़ोतारी हो सके।



पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का अधित प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिकी करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अधियंता अजीत सांगवान ने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उपयुक्त मशीनों जैसे रोटाबोर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो डिल व हैप्पी सीडर का प्रयोग करके गेहूं की सीधी बिजाइ करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को जलाने की बजाय उका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उर्वरा शक्ति बढ़ाई जा सके। मेले में आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया।

विज्ञान केन्द्र में लगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्श केंद्र) डॉ. सुनील ढांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अक्षवर्ष में आयोजित वर्चुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हैप्पी सीडर व जीरो टिलोज से बिजाइ जैसी जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान विद्यार्थियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती

है स्मॉग वाली धुंध

अधियंता गोपी राम सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूक्ष्म जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धुएं से पर्यावरण में जहरीली गैसें घुल जाती हैं जो स्मॉग बानी धुएं वाली धुम्ख का कारण बताती हैं। इससे लोगों की श्वसन संबंधी प्रेरणानियां बढ़ जाती हैं। इसके अलावा मिट्टी में मीजूट फायदेमंद जीवाणु व केचुए भी मर जाते हैं। डॉ. सत्यवीर कुमार ने बताया कि पराली से बायोगैर बनाने की विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेन्द्र सिंहांग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डीनिंग आदि को जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे मशहूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, डिप सिंचाई, पांचीहाउस, कॉल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जगत क्रान्ति	07.11.2020	--	--

किसान अब धान वाले खेत में कर सकेंगे आलू की बिजाई

हिसार/विनोद गांधी : धान की फसल वाले खेत में आलू की बिजाई करने वाले किसानों के लिए खुशखबरी है। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने धान की पराली के प्रबंधन का इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक से हल निकाला है, जिसके प्रयोग से अब पराली को बिना जलाए व खेत के अंदर ही प्रयोग कर आलू की बिजाई की जा सकेगी। इस पराली प्रबंधन तकनीक को हाल ही में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रोजेक्ट (आलू) की वार्षिक वर्कशॉप में स्वीकृति मिल चुकी है। यह वर्कशॉप केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला के निदेशक डॉ. मनोज कुमार की अध्यक्षता में शिमला में आयोजित हुई थी। इस तकनीक को उन क्षेत्रों के लिए सिफारिश किया गया है जहां किसान धान की फसल के बाद आलू की बिजाई करते हैं।

इन वैज्ञानिकों ने किया अनुसंधान, सकारात्मक परिणाम आने पर किसानों के लिए की सिफारिश पराली प्रबंधन की इन-सीटू अवशेष प्रबंधन तकनीक पर कृषि महाविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग के अध्यक्ष डॉ. अरुण कुमार भाटिया के नेतृत्व में डॉ. विजय पाल पंधाल, डॉ. लीला बोग व क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान उचानी(करनाल) से डॉ. धर्मबीर यादव के सहयोग से अनुसंधान किया गया।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
सिटी पल्स	07.11.2020	--	--

पराली का प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसानः वैज्ञानिक

कृषि विज्ञान
केंद्र सदलपुर ने
गांव साहमें
आयोजित किया
किसान मेला



दिसारा। कथि विजान केंद्र मटलप्पा टाटा माह में आयोजित मेले में सौजन्य किसान व संबोधित करते रहा।

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्तुलन कृषि मेले के बाद अप्रैल कृषि विज्ञान केंद्र तक जिता सरीरी किसान मेले आयोजित करने का फसलता लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवधेष्ठ प्रबंधन के अलावा फसल अवधेष्ठ कल्पना करने का अन्य जानकारीयों से अवधारणा जारी रखा गया है। इसी कड़ी में कृषि विज्ञान केंद्र सलर्पुत्र ने गांव सभा में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीट फसल अवधेष्ठ प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में बैचानिक द्वारा किसानों की अवधेष्ठ जलाने की बजाय उन्हें जर्मीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करने के लिये किसानों की आमदानी बढ़ाने के तरीके भी दिये गए। कृषि विज्ञान के समन्वयक डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नीही बल्कि उस मिश्रि में जलाने कर जलाने की तरीकत है ताकि जलाने की ऊर्जा शक्ति में बढ़ाती ही रहे। पराली जलाने से पराली प्रदूषण के साथ-साथ आज जननीवन और भूमि के स्थायी पर परिपत्ति अरप्त दर्ता है। अधियंत्रण

अंजीत सांगवान ने परली को जर्मनी में मिलने के लिए उपर्युक्त मरम्मानों जैसे रोटावेटर आदि के बारे में जाकरारी दी। ऐसे में असाधारण के गांव के 200 से ज्यादा लोग इस दौरान भेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अय विधागों की स्टाल भी लगाई गई।
अंजीत जलाने से ही बढ़ती है स्मार्ट वाटी धूप अधिकारी गोपी राम सांगवान ने बताया कि इसकी जलाने से सूखम् जीव व मित्र कीट नष्ट हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से जहरीली गैसें थुंडे से अपवाहन में जहरीली गैसें थुंडे से

जाती हैं जो स्मार्ग यानी धैर्य वाली धूम-धन का कारण बनती है। इससे लागतों की शवसन संबंधी परेशनियाँ बढ़ जाती हैं। डॉ. सल्लनियर कुंडल वे बताता कि परामर्श से वायोग्रेस बनाने की विभिन्न और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियाँ विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागमैस अधिकारी डॉ. झुंसुदेंट सिलहोन ने किसानों को बाबामानी, जैविक खेती, किंचन गार्डनिंग आदि की जाकरी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा लालेहाँ जा रही कल्याणकरी योजनाओं जैसे मशरूम, मधुमक्कड़ी, पालन, बागवानी, डिप संचार्ड, पौलीहाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

प्रत्येक क्षेत्रों में लगाए जाएंगे
किसान मेले
विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-
निदेशक (किसान परमाणु केंद्र) डॉ.
सुनील ठांडा ने बताया कि विधि-विद्यालय द्वारा अनुबूति में
आयोजित वर्ष-अन्त कृषि मेले के बाद
अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के
माध्यम से किसान मेलों का
आयोजित करने का फैसला लिया
गया है। अब किसान मेलों के माध्यम
से किसानों को फसल अवशेष
प्रधान, अवशेषों की जीचें में ही ऐसी
सीढ़ी व जीरो टिलोंजे से बिजाए जैसी
जानकारियों से अवशत कराया जाएगा
और किसान व विद्यार्थियों के लिए
जागरूकता अभियान भी चलाए
जायेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	08.11.2020	--	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान

● हकूमि के वैज्ञानिकों ने किसानों को बताए फसल के अवशेष ना जलाने के लाभ

हिसार, 7 नवंबर (सुनें द सोइँ) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने बच्चुआला कृषि मेले के बाद अब प्रलक्ष कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले आयोजित करने का ऐसलाला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अकालीन फसल विविधकारण से सहित अन्य जानकारियों से अवगत कराना जा रहा है।

इसी में कृषि विज्ञान केंद्र सदस्यपुर ने गांव साहू में एक विस्तार मेले का अयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीटू फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के फसलों के अवशेष जलाने को बताया गया। जमीन में ही मिलाने पर जोर दिया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन करके विस्तारों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताये गए। कृषि विज्ञान केंद्र के सम्बन्धकार्यक्रम ने कहा कि पराली का विचार प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर बिको करके



कृषि विज्ञान केंद्र सदस्यपुर द्वारा गांव साहू में आयोजित किसान मेले में गौजुड़ किसान व सभावित करते रहते।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्ट्रोगन गाली धूंध

अधिकारी जमीन सांगवान ने बताया कि पराली जलाने से सूखा जीव वित्र कट नहीं जाते हैं, जिनको भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने वे नियमों का भी धूंध के पर्यावरण में जारी होने में योग्य हैं जो स्वैच्छिक यानी धूंध यानी धूंध का कराये बनती है। इससे लोगों को शब्दन बनकर जलाने वाले जलाने वाली हैं। इसके अलावा मिट्टी में गौजुड़ कार्पोरेट जीवाणु व कोंडे भी मर जाते हैं। डॉ. सल्लुकी कुम्हे ने बताया कि पराली से विवरेस करने की विधि और जीविक लक्ष्य व दृष्टिकोण की विविध विकास को जो कुशी है।

गलाने को जलाने है तबीय जमीन आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता की ऊंची शक्ति में बढ़ती ही हो सके। अजीत सांगवान ने पराली को पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण जमीन में मिलाने के लिए उत्तम के साथ-साथ आम जनजीवन और मरीनों जैसे रोटोवेटर आदि के बारे भूमि के स्थानीय परिवर्ती असर में जानकारी दी। साथ ही किसानों पड़ता है। किसान पराली का विचार प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व प्रयोग करके गौजुड़ की संधी विजाइ करने का आहुत जिला में मिला कर

प्रयोक कीमी में लगाए जाएंगे किसान मेले

विसार शिक्षा नियंत्रणालय के स्टॉनियोन किसान पराली केंद्र डॉ. सुनील धाड़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अल्पवर में आयोजित वर्षुंड ब्रह्म कीष मेले के बाद अब प्रलक्ष कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलोंको आयोजित करने का किसान विषय जारी है। अब किसान मेले के माध्यम से विस्तार विस्तार अवशेष प्रबंधन, अवशेष के ऊंचे में ही हैंपी सोडर व जीरे दिलज सोबिजाह जैसी जानकारीयों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थियों के लिए जामकरक अवशेष भी चलाए जाएंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	07.11.2020	--	--

पराली प्रबंधन कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान : डा. नरेंद्र

पांच बजे ब्लॉग

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्चुअल कौशिक मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र पर जिला स्तरीय किसान मेले अधीक्षित करने का फैसला लिया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल अवशेष प्रबंधन के अवशेष विविधकरण सहित अन्य जानकारी से अवकाश किया जा रहा है। इसी कही में शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साहू में एक किसान मेले का आयोजन किया। इस मेले का आयोजन इन-सीट फसल अवशेष प्रबंधन परियोजना के तहत किया गया। मेले में वैज्ञानिकों द्वारा किसानों के फसलों के अवशेष जलाने की वजाय उन्हें जानीन में ही मिलाने पर और इया गया। साथ ही उनका बेहतर तरीके से प्रबंधन

करके किसानों की आमदनी बढ़ाने के तरीके भी बताये गए। कृषि विज्ञान केंद्र के सम्बन्धित डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पालन जलाने की जरूरत है ताकि जानीन को उत्तरी शक्ति में बढ़ातरी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जनजीवन और भूमि के स्थानाच्छ पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उत्तरी प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर विक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अधिकारी अजीत सागवान ने पालन की जानीन में मिलाने के लिए उपयुक्त महीनों जैसे ऐटोवेटर आदि के बारे में जानकारी दी। किसानों के बारे में वैज्ञानिकों द्वारा प्रयोग करके गेहूं की सीधी विजाहि करने का आह्वान किया ताकि फसल अवशेषों को

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर
ने गांव साहू में आयोजित
किया किसान मेला

जलाने की बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और उत्तरी शक्ति बढ़ाई जाती है। किसान पराली का उत्तरी प्रबंधन करते हुए उसकी खाद व चारा तैयार कर विक्री करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अधिकारी अजीत सागवान ने पालन की जानीन में मिलाने के लिए उपयुक्त महीनों जैसे ऐटोवेटर आदि के बारे में जानकारी दी गई। किसानों के चलते सामाजिक दूरी, मास्क व सेनेटोज-जेशन का विशेष ध्यान रखा गया। इस दौरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनी वह अन्य विभागों की स्टाफ भी सामाई गई।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मार्ट वाली धूम

अभियंता गोपी राम सागवान ने बताया कि पराली जलाने से सुख धूम व विष कोट नहीं हो जाते हैं, जिनकी भरपाई करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धूर्ष से पर्यावरण में जहरीली धूम सूख जाती है जो मध्य वाली धूर्ष वाली धूम का कारण बनती है। इससे लोगों की शरकतन सबकी परेशानीय बढ़ जाती है। इसके बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को अधीक्षित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के बताया कि पराली से बायोसैस बनाने को विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विवरित की जा चुकी हैं। जिला आगवानी की जानकारी डॉ. सुरेंद्र सिंह ने किसानों को वागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा

चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाओं जैसे महसूम, मध्यमकाली पालन, बागवानी, कृषि सिंचाई, पौलीहाउस, कॉल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

प्रत्येक कैंचीके में लगा जाएंगे किसान मेले के विस्तार शिक्षा निदेशालय के सह-नियंत्रक किसान परामर्श केंद्र। डॉ. सुरेंद्र दाढ़ा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अल्टुबर में आयोजित वर्षुअल कृषि मेले के बाद अब प्रत्येक कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को अधीक्षित करने का फैसला लिया गया है। अब किसान मेलों के बताया कि पराली से बायोसैस बनाने को विधि और जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विवरित की जा चुकी हैं। जिला आगवानी की जानकारी डॉ. सुरेंद्र सिंह ने किसान व विधायियों के लिए जागरूकता अभियान भी चलाए जाएंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
जीवन आधार	07.11.2020	ऑनलाइन	--

कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर ने गांव साह में आयोजित किया किसान मेला

वर्धुअल कृषि मेले के बाद अब हर कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान मेले आयोजित कर रहा एचएम

हिसार,

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय ने वर्धुअल कृषि मेले के बाद अब प्रथम कृषि विज्ञान केंद्र पर किसान मेले आयोजित करने का फैसला किया है। इन मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन के अलावा फसल विविधिकरण लहित अन्य जानकारियों से अवगत कराया जा सकता है। इसी कृषि कृषि विज्ञान केंद्र सदलपुर से गांव साह में एक किलोमीटर की आयोजन किया गया। इस मेले का आयोजन इन सीटों पर किसानों को आयोजन करने के अवशेष जलाने की बजाय उन्हें जलीन में ही किलोमीटर दूरी का द्वारा किसानों की आवश्यकी बढ़ाने के लिए भी कठाए गए। कृषि विज्ञान केंद्र के समन्वयन डॉ. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की नहीं बहिक उसे सिर्फ़ इसे किसान कर गलाने की जरूरत है ताकि जलान की डब्बेरा शक्ति में बढ़ोतारी हो सके। पराली जलाने से पर्यावरण प्रदूषण के साथ-साथ आम जलजीवन और भूमि के सम्बन्ध पर विपरीत असर पड़ता है। किसान पराली का उचित प्रबंधन करते हुए उनकी साध व चारा नेतृत्व कर बिक्की करके आमदनी बढ़ा सकते हैं। अभियंता अंजीत सांगवाला ने पराली को जलान में मिलाने के लिए उपयोग जूरी जूरी जूरी रोटाकेटर आदि के बारे में जानकारी दी। साथ ही किसानों से जीरो ड्रिंग व हेच्ची सीड़र का प्रयोग करके गोंदे में सीधी किसान का आहवान किया गया ताकि फसल अवशेषों की जलाने से बजाय उनका भूमि में ही उपयोग किया जा सके और ऊर्जा शक्ति बढ़ाई जा सके। सेवे में असाधारण के गांव के 200 से ऊपरा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवाद लियें बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। किसानों संकल्पन के बलते सामाजिक दूरी, सामाजिक सेवाओं द्वारा जलान का विशेष ध्यान रखा गया। इस दूरान मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की जानकारी वह उन्नयन विभागों की सदाल भी लगाई गई।

अवशेष जलाने से ही बढ़ती है स्मार्ट वाली संधि

अभियंता गोपीराम सांगवाला ने बताया कि पराली जलाने से सूखा जीव विक्री कीट बाल घट हो जाते हैं, जिनकी भरपांड करना बहुत ही मुश्किल है। इसके अलावा अवशेष जलाने से निकलने वाले धूएं से पर्यावरण में जहरीली गोंदे धूएं पूल जाती हैं जो स्फूर्त यानी धूएं वाली धूम्य का कारण बनती है। इसके लोटी की शब्दन संबंधी परशानियों बढ़ जाती हैं। इसके अलावा किसी में सौजूद कायदे में जीवाणु व कैंचुएं भी मर जाते हैं। डॉ. मन्यवीर कुमार ने बताया कि पराली से बायोगृस बलाने की विधि और जीविक खाद व दरिया बलाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। किसान बागवानी अधिकारी डॉ. सुरेंद्र सिंह के किसानों की बागवानी, जूतिक लेटी, किंचल गाँड़विंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार द्वारा बढ़ाई जा रही काल्पनिक जानकारी योजनाओं जैसे मसारूम, सभूलकर्णी पालन, बागवानी, ड्रिप सिंचाई, पॉलीहाउस, कॉल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी दी।

प्रथम कैवीक में जगाए जाएंगे किसान मेले

विस्तार रिक्त निदेशालय के सह-निदेशक (किसान परामर्शी केंद्र) डॉ. सुनील दांडा ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा अन्तूबर में आयोजित वर्धुअल कृषि मेले के बाद अब प्रथम कृषि विज्ञान केंद्र के माध्यम से किसान मेलों को आयोजित करने का फैसला किया गया है। अब किसान मेलों के माध्यम से किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, अवशेषों के बीच में ही हेच्ची सीड़र व जीरो डिलेज से किसान जानकारियों से अवगत कराया जाएगा और किसान व विद्यार्थी के लिए जावारकर्ता अभियान भी चलाए जाएंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....दीनांक मार्कट

दिनांक ..9.. 11.. 2020 पृष्ठ संख्या.....2.....कॉलम.....7-8.....

एचएयू में मशरूम उत्पादन तकनीक पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू

हिसार | चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है।

प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। डॉ. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई



के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

मैट्रिकुलेशन

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक ११.११.२०२० पृष्ठ संख्या ३ कॉलम ३-५

पराली से खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते किसान : चुघ

जागरण संवाददाता, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुंब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण)डा. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुंब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुंब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं।

मार्केटिंग सहित अन्य



प्रतीकात्मक तस्वीर • जागरण आर्काइव



एचएयू का गेट • जागरण आर्काइव

विषयों पर दी जानकारी: संयोजिका डा. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुंब में होने वाले कीड़े-मकोड़े व बीमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डा. राकेश चुघ ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों

के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी।

35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण: इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

— पंजाब कृषि

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक .. ११. १. २०२० पृष्ठ संख्या..... २ कॉलम..... १-३

कम लागत से मशरूम व्यवसाय शुरू कर आमदनी बढ़ा सकते हैं किसान

मशरूम उत्पादन तकनीक पर 3 दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

हिसार, 8 नवम्बर (ब्यूरो): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में 3 दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम



प्रतिभागियों से ऑनलाइन रूबरू होते वैज्ञानिक।

से होने वाले लाभ और मशरूम के पौष्टक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी बताया।

35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे प्रशिक्षण : इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के

35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

१८ अगस्त

समाचार पत्र का नाम.....

दिनांक ९. ।।. २०२० पृष्ठ संख्या ९ कॉलम २-४

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम का उत्पादन कर सकते हैं किसान

हरियाणा व्यूजन एवं हिसार

हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आरएस हुड्डा की देखरेख में किया जा रहा है। संस्थान के सहनिदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर कम लागत में खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर आर्थिक लाभ

■ तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर आरंभ

प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थीयों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि की जानकारी दी। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ों व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन

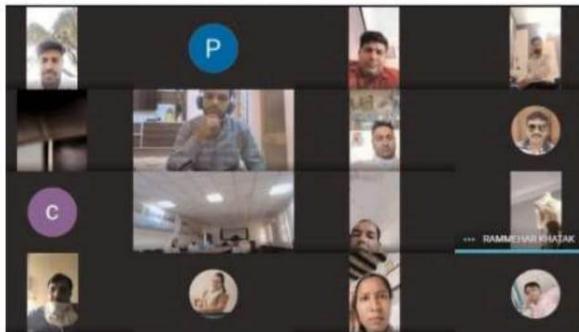
व मार्केटिंग की जानकारी दी। डॉ. राकेश चूध ने मशरूम की खाद बनाने तथा बिजाई के तरीकों के साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं। 35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे प्रशिक्षण प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी शिरकत कर रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हैलो हिसार	09.11.2020	--	--

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू



हैलो हिसार न्यूज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हड्डा के मार्गदर्शन व

देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय

शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ों व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग

**कहा, तकनीकी ज्ञान
लेकर खुम्ब उत्पादन
का व्यवसाय शुरू
किया जा सकता है**

इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चूध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक सवेरा	09.11.2020	--	--

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

हिसार, (सुरेन्द्र सोढ़ी) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर औनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुणा के भागदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को सबोचित करते हुए साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहाँ से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। सथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लगात से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस औनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़े व धिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का भूत्य संबंधन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चूध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ- वाथ प्रारंभी से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रक्रिय के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सदालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विभिन्न विद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यावसाय शुरू कर सकते हैं।



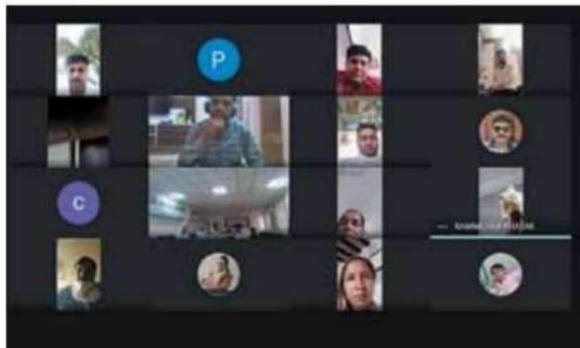
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टूडे	09.11.2020	--	--

पराली से भी खाद तैयार कर करें मशरूम उत्पादन मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

टुडे न्यूज़ | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे



प्रशिक्षण शिविर के दौरान प्रतिभागियों से ऑनलाइन रूबरू होते वैज्ञानिक।

खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने

प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कोड़-मकोड़े व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चूध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के

35 प्रशिक्षणार्थी ले रहे हैं प्रशिक्षण : इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्सा ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।

साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हरियाणा वाटिका	09.11.2020	--	--

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

वाटिका@हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण)डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर

मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी।

उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ों व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल हिसार	08.11.2020	--	--

मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

पल पल न्यूज़: हिसार, 8 नवंबर। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का अयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। डॉ. राकेश चुध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पल पल हिसार	08.11.2020	--	--

किसानों को जागरूक करने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र ने लगाया मेला

जिसमें आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने लिया भाग

किसान पराली को जलाने की बजाए जनीन ने निलाने का कार्य करे इससे गूँगी की ऊपरांक शक्ति बढ़नी व पर्यावरण में प्रदूषण नी होगा: अंजीत सांगवान

पल पल न्यूज़: आदमपुर, 8 नवंबर (एलावादी)। सल्लपुर के कृषि विज्ञान केंद्र द्वारा साहू गांव में इन सीटू क्रॉने रेसिटू मैनेजमेंट परियोजना के तहत फसल अवशेष प्रबंधन विविध पर किसान मेले का आयोजन किया गया। जिसमें आसपास के गांव के 200 से ज्यादा किसानों ने भाग लिया। मेले में किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन, फसल उत्पादन, खरपतवान नियंत्रण, बागवानी व पशु पालन की जानकारी दी गई। कोरोना संक्रमण को लेकर मेले में विशेष सावधानी बरती गई सभी किसानों को मास्क वितरित किए गए। इस मेले में फसल अवशेष प्रबंधन की मशीनरी वह अन्य विभागों की स्टाल एजीविशन भी लगाई गई। केंद्र के को-ऑफिसिटर डा. नरेंद्र कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि पराली जलाने की जरूरत है। अंजीत सांगवान ने कहा कि



में मिलाकर गलाने की जरूरत है ताकि जमीन का स्वास्थ्य व उपजाऊपन सुधरे। उन्होंने कहा कि पराली जलाना किसी भी सूत्र में फायदेमंद नहीं है पराली जलाने से किसानों का ही नुकसान होता है वही प्रालिका उचित प्रबंधन कर कर उसकी खाद बनाकर या फिर विक्री कर कर किसान इससे लाभ उठा सकते हैं इसके लिए किसानों में जागरूकता बढ़ने की जरूरत है। अंजीत सांगवान को जलाने की

करें इससे भूमि की ऊपरांक शक्ति बढ़ेगी व पर्यावरण में प्रदूषण भी होगा। उन्होंने पराली को जमीन में मिलाने के लिए उत्तम मशीनें जैसे रोटाकेटर, हैपी सीडर, जीरो ड्रिल आदि के बारे में विस्तार पूर्वक बताया। उन्होंने बताया कि किसान जीरो ड्रिल व हैपी सीडर का प्रयोग करके गोहंड की सीधी बिजाई कर सकते हैं व दूसरे किसानों के मुकाबले अधिक उत्पादन ले सकते हैं। गोपीराम सांगवान ने बताया कि

करना बहुत ही मुश्किल है। डा. सल्लपुर कुंडू ने बताया कि पराली से बायोपास बनाने की विधि और जैविक जैविक खाद व दरिया बनाने की विधियां विकसित की जा चुकी हैं। जिला बागवानी अधिकारी डा. सुरेंद्र सिंहग ने किसानों को बागवानी, जैविक खेती, किचन गार्डनिंग आदि की जानकारी के साथ हरियाणा सरकार की स्कीमों जैसे मशहूम, मधुमक्खी पालन, बागवानी, डिप सिंचाई, पाली हाउस, कोल्ड स्टोरेज आदि की जानकारी किसान को जानकारी दी।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पाठक पक्ष	08.11.2020	--	--

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान

पाठकपक्ष न्यूज

हिसार, 8 नवम्बर : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणार्थियों को संबोधित करते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से

अधिक लाभ उठाने का आहवान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पवित्रा कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों को मशरूम की खाद तैयार करने की

विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़े व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. राकेश चुध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाई के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उसमें विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणार्थियों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
पांच बजे न्यूज	08.11.2020	--	--

मशरूम उत्पादन तकनीक पर तीन दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शुरू

पराली से भी खाद तैयार कर मशरूम उत्पादन कर सकते हैं किसान



पांच बजे न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान में तीन दिवसीय खुम्ब उत्पादन तकनीक विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ हुआ। प्रशिक्षण का आयोजन विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. आर.एस. हुड्डा के मार्गदर्शन व देखरेख में किया जा रहा है। प्रशिक्षणाधिर्थों को संबोधित करते हुए साथना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने इस प्रशिक्षण का अधिक से अधिक लाभ

उठाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि किसान यहां से तकनीकी ज्ञान लेकर खुम्ब उत्पादन का व्यवसाय शुरू कर सकते हैं और अधिक लाभ अर्जित कर सकते हैं। साथ ही उन्होंने कृषि अवशेषों से कैसे खुम्ब उत्पादन करने की तकनीकों के बारे में भी बताया। उन्होंने कहा कि किसान कम लागत से मशरूम का व्यवसाय शुरू कर अपनी आमदानी बढ़ा सकते हैं। इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका डॉ. पावता कुमारी ने मशरूम से होने वाले लाभ और मशरूम के पोषक व औषधीय गुणों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने प्रशिक्षणाधिर्थों को मशरूम की

खाद तैयार करने की विधि के बारे में भी विस्तार से बताया। इसके अलावा खुम्ब में होने वाले कीड़े-मकोड़ों व बिमारियों का प्रबंधन, मशरूम का मूल्य संवर्धन व मार्केटिंग इत्यादि के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। डॉ. गोकर्ण चौध ने मशरूम की खाद बनाने व बिजाइ के तरीकों के साथ-साथ पराली से खाद तैयार कर उपर्यंत विभिन्न प्रकार के मशरूम उत्पादन की जानकारी दी गई। उन्होंने खाद व बीज बनाने से संबंधित प्रशिक्षणाधिर्थों के सवालों के जवाब दिए। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय द्वारा मशरूम उत्पादन के लिए तैयार खाद को खरीदकर किसान अपना व्यवसाय शुरू कर सकते हैं।

35 प्रशिक्षणाधीयों ले रहे हैं प्रशिक्षण

इस ऑनलाइन प्रशिक्षण की संयोजिका ने बताया कि इस प्रशिक्षण में प्रदेश के विभिन्न जिलों के 35 प्रतिभागी हिस्से ले रहे हैं। इस दौरान मशरूम से जुड़े विभिन्न विषयों पर अपने व्याख्यानों से प्रतिभागियों को अवगत करवाया जाएगा व मशरूम के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण में वैज्ञानिक प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण संबंधी उनके अनुभवों को लेकर विचार-विमर्श भी करेंगे।



चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम.....
ग्रन्थालय.....
दिनांक 9.11.2024 पृष्ठ संख्या..... 6 कॉलम..... 1 - ४

मंडे प्रोजेक्टिव ■ एचएस्यू की एसोसिएट प्रोफेसर और कल्चरल कोऑर्डिनेटर संघ्या का नया तरीका, साइंस विषय की जटिलताओं को विद्यार्थियों के लिए बना रहा सरल संघ्या ने स्वांग शैली में तैयार किए साइंस बेर्स चैप्टर, एनसीआरटी ने दिया प्रोजेक्ट

अशुल पांडे | हिन्दू

अक्सर स्कूली बच्चे माहस जैसे सज्जेटस संघ्य शर्मा को एनसीआरटी कैम्पसीट की से दूर भाग में नज़र आते हैं। इसके पीछे बच्चों का तक होता है कि उन्हें विज्ञान के संघ्य शर्मा को एनसीआरटी कैम्पसीट की विज्ञान सेकेन्टरी स्वयं वर्षा ने विक्रान्ति की देखा जिससे बाद उन्हें विचार अदा कि आर अदा विषय रस्त समझ नहीं आ रहा। ऐसे साइंस से जुड़े चैर्टस के लोकलोक्लाओं के में शहर के एचएस्यू की संस्कृति प्रोफेसर और कल्चरल कोऑर्डिनेटर संघ्या शर्मा ने वच्चों को साइंस समझाने का एक नया रासायनिक विकास है, जिससे बच्चे आसानी से मर्दी में शर्मा को साइंस के एक चैर्ट को स्वांग गाते हुए नाम साइंस सज्जेट को समझ पाते हुए चुनी है। खास बात है कि संघ्या के इस प्रयोग में एनसीआरटी भी जुड़ चुनी है। दरअसल एक्स्प्रेसन रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एनसीआरटी) के नवीकरण के एक चैर्ट को स्वांग शर्मा ने नेशनल कॉर्सिल और एक्स्प्रेसन रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एनसीआरटी) आए इसी बजह से अब संघ्या शर्मा को अब कई चैर्ट्स को स्व शैली में तैयार करने का प्रोजेक्ट दिया गया है।

जौ आसानी से समझ भी पा रहे हैं और इसे एक्स्प्रेस ने एक्स्प्रेस की समझ शर्मा को एनसीआरटी कैम्पसीट की समझ शर्मा को एनसीआरटी कैम्पसीट की विज्ञान सेकेन्टरी स्वयं वर्षा ने विक्रान्ति की देखा जिससे बाद उन्हें विचार अदा कि आर अदा विषय रस्त समझ नहीं आ रहा। ऐसे साइंस से जुड़े चैर्टस के लोकलोक्लाओं के में शहर के एचएस्यू की संस्कृति प्रोफेसर और कल्चरल कोऑर्डिनेटर संघ्या शर्मा ने वच्चों को साइंस समझाने का एक नया रासायनिक विकास है, जिससे बच्चे आसानी से मर्दी में शर्मा को साइंस के एक चैर्ट को स्वांग गाते हुए नाम साइंस सज्जेट को समझ पायें। इससे बाद उन्होंने संघ्या शर्मा को साइंस के एक चैर्ट को स्वांग शैली में तैयार करने को कहा। इसे संघ्या शर्मा ने नवीकरण के जीव जनन के पास को स्वांग शैली में तैयार किया, जो एनसीआरटी को पर्वद आए इसी बजह से अब संघ्या शर्मा को अब कई चैर्ट्स को स्व शैली में तैयार करने का प्रोजेक्ट दिया गया है।



संघ्या शर्मा की प्रस्तुति देती एच यू एसोसिएट प्रोफेसर संघ्या शर्मा में बदला जिसके बाद अब बच्चे इस चैर्ट

बच्चों को समझने में हो आसानी इसलिए ठेठ नहीं बोलचाल के हरियाणवी भ्रांदाज में तैयार किया स्वांग

एनसीआरटी की ओर से तैयार किए गए इन बच्चियों का फलवा पूरे देश के स्टॉडेंट उठा पाएं इसके लिए संघ्या ने ठेठ हरियाणवी के बजाए केवल अंग्रेज को ही इसेमाल किया। उन्होंने हिन्दी को हरियाणवी अंग्रेज में स्वांग शैली में प्रस्तुत किया जिससे देश भर के स्टॉडेंट इस समझ पाएं और खुद को इसके साथ जड़ पाएं। संघ्या ने स्वांग की प्रस्तुति में हरियाणवी पर्सेट ही रखा था और इसका नेशन हिंदी में रखा।

जिससे बच्चे इसे आसानी से समझ पाएं। इस स्वांग प्रस्तुति में संघ्या शर्मा के साथ हरमोनियम में रखने वाला और नगाड़े में सुधाप नगाड़ा ने साथ दिया। 2 महीने में तैयार किया स्वांग, समझाया जीव जनन का चैप्टर

संघ्या शर्मा ने बताया कि इस स्वांग को उन्होंने 2 महीने की मेहनत से तैयार किया। एक घंटे

के दूर्दृश्य इस समझ के जीव जनन के पास के जीरप बच्चों को ध्वनि हत्या के प्रति अवैर करने का भी काम किया। संघ्या के अनुसार अगर बच्चों को बचपन से ही अवैर किया जाए तो भूग हत्या जैसी बुड़ियों को दूर किया जा सकता है। संघ्या शर्मा ने बताया कि इस प्रोजेक्ट को स्टॉडेंट्स के साथ टीचर्स ने भी पर्वद किया जिसके बाद अब 16 से 21 नववर तक के लिए एनसीआरटी एक वर्कशॉप ऑर्गेनाइज करताने जा रहे जिसमें एन्वायरनमेंट सेफ्टी और पॉल्यूशन प्री एन्वायरनमेंट सज्जेट पर संघ्या स्वांग की प्रस्तुति देगी।